वार्तालाप सी.डी. नं. 286, तारीख: 03.04.07, जम्मू
Disc.CD No.286, dated 03.04.07 at Jammu
Part -1

Time: 2.33-11.10
किसी भाई ने पूछा – बाबा, एक बात पर तो निश्चय है कि – भगवान इस धरती पर आकर अपना पार्ट जो हैं, वो बजा रहे हैं। अब जबकि ज्ञान का भी इतना सोजरा हो गया है, उजाला हो गया है, लेकिन ये जो तथाकथित बी.के.वाले हैं, इनकी बुद्धि का ताला कब खुलेगा?

बाबा ने जवाब दिया – बताया, ये सृष्टि रूपी वृक्ष है। वृक्ष में पहले पत्ते हैं या पहले जड़ें हैं या पहले बीज हैं? (सभी ने कहा – पहले बीज हैं) पहले सुधार किसका होगा? पत्तों का पहले सुधार होगा, टहनियों का होगा, तने का होगा, जड़ों का होगा या पहले बीज का सुधार होगा? (सभी ने कहा – बीज का) अच्छा। (भाई ने कहा – पहले बीज का सुधार होगा) हाँ। तो बीज एडवांस पार्टी में हैं और जड़ें बी.के.में हैं। जड़ें बड़ी–बड़ी दिखाई पड़ती हैं और बीज, बीज छोटा होता है, दूसरे जब वृक्ष तैयार होता है या पौधा तैयार होता है, तो वो बीज अपने को मिक्स कर देता है। गाते भी हैं कि – "दाना खाक में मिलकर गुले गुलज़ार होता है"। कुछ मिट्टी में मिल जाता है, कुछ पौधे में चला जाता है। वो बीज तब तैयार होता है, जब वृक्ष पूरा हो जाता है, फूल, फूल से फल और फल पकने के बाद बीज फल के अंदर डिटैच हो जाता है। फल से भी डिटैच हो जाता है। वृक्ष से भी डिटैच हो जाता है। तो क्या ये स्टेज अभी आयी है बीज की? बीजों की ये स्टेज जब तक नहीं आयी है, तब तक जड़ों के ऊपर उँगली उठाना, तने के ऊपर उँगली उठाना, टहनियों के ऊपर उँगली उठाना, पत्तों के ऊपर उँगली उठाना, फलों के ऊपर उँगली उठाना बेकार है।

अभी आप आ गये एडवांस पार्टी में। अभी आप जड़ अपने को समझते हैं या दुनियाँ का बीज समझते हैं? (भाई ने कहा – बीज) अगर बीज हैं, तो जड़ें आपके बच्चें हैं, रचना हैं या आपके रचयिता हैं? रचना हैं। तो रचना जैसी भी है, जैसे बाबा कहते हैं – बच्चे, तुम जो हो, जैसे हो, मेरे हो। तो सारा मनुष्य सृष्टि रूपी जो वृक्ष है, वो है तो बीज बाप का ही। (किसी भाई ने कहा – आएँगे वो भी। कहाँ जाएँगे) पहले वो आएँगे। बाद में दुनियाँ वाले आएँगे। पहले सुधार किसका होगा? पहले घर का सुधार। अब चाहे वो घर के बच्चे माँ को फालो करने वाले हों, कन्याएँ जास्ती किसको फालो करती हैं? माँ को फालो करती हैं। और चाहे वो बाप को फालो करने वाले बच्चे हों, कन्याओं को वर्सा नहीं मिलता है। और बच्चों को, बच्चों को वर्सा मिलता है। तो एडवांस पार्टी में आये हुए जो भी बच्चे हैं, वो बाप के बच्चे हैं कि बच्चियाँ हैं? बच्चे हैं। चाहे गुड्डियाँ हैं, चाहे कन्याएँ हैं, तो भी बुद्धि में बैठा हुआ है कि – हम बाप के वर्सा पाने वाले बच्चे हैं। और बड़े बच्चे हैं या छोटे बच्चे हैं? (सभी ने कहा – बड़े) हँ? (बड़े हैं) बड़े बच्चे हैं? (किसी ने कहा – छोटे बच्चे हैं) छोटे बच्चे हैं। कोई कहते हैं – बड़े बच्चे हैं, कोई कहते हैं – छोटे बच्चे हैं।

बड़े बच्चे वो हैं, जो सूर्यवंशी हैं। क्या? जो सूर्य को ही अपना बाप समझते हैं। न चंद्रमा के प्रभाव में आते, न चंद्रवंशियों के प्रभाव में आते। न इस्लाम के प्रभाव में आते, न इस्लाम धर्मवंशियों के प्रभाव में आते, न क्राइस्ट और क्राइस्ट के बीज के प्रभाव में आते, न क्राइस्ट के आधारमूर्त के प्रभाव में आते, न क्रिश्चियन धर्म को फालो करने वालों के प्रभाव में आते। वो किसके प्रभाव से सदैव प्रभावित हैं? एक सूर्य बाप के प्रभाव से प्रभावित हैं। कोई दूसरा उनको आ करके कनवर्ट कर नहीं सकता। तो वो बड़े बच्चे हैं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बड़े बच्चों को बाप समान कहा जाता है। जैसे बाप खुदा न ख्वास्ता शरीर छोड़ देता है और बाप के दस बच्चे हैं, 9 बच्चे हैं, तो बड़े बच्चे का क्या फर्ज बनता है? कि जो भी छोटे दूसरे बच्चे हैं, दूसरे भाई–बहनें हैं, उनको भी उसी तरह परवरिश करें, उसी दृष्टि से देखें, जैसे अब तक बाप ने, बाप ने देखा। इसलिए ये बुद्धि में बात आना कि – ये बी.के. वाले कब सुधरेंगे? ये जड़ें कब सुधरेंगी? तो उसका जवाब आ जाता है। कब सुधरेंगे? जब हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा। कहीं न कहीं हमारे संगठन में, हमारी यूनिटी में कमी है। हमारी यूनिटी परिपक्व स्टेज को पहुँच जावेगी, तो हमारी यूनिटी को कोई भी तोड़ नहीं सकेगा। और यूनिटी काहे से बनती है? प्योरिटी से। हमारी प्योरिटी में कहीं कोई गड़बड़ है। मूल बात एक ही आ जाती है। घड़ी–घड़ी अपन को देखना है – क्या इस संसार रूपी वृक्ष से मैं बीजरूप आत्मा डिटैच हो गयी हूँ? ये देह, ये देह के सम्बन्धी, ये देह के पदार्थ, ये देह के स्थान देखते हुए भी न देखने में आएँ, सुनते हुए भी न सुनने में आएँ। ऐसी स्टेज बन जाए।

Time: 2.33-11.10
A brother asked – Baba, one thing on which (I) have faith is that – God is playing His part having come on this Earth. Now, when there is so much light of knowledge, so much brightness, but these so-called BKs, when will their intellect be unlocked?

Baba replied – It has been told that this world is like a tree. In a tree, are the leaves first, are the roots first or are the seeds present first? (Everyone said – first there are seeds) Who would get/be reformed first? Will the leaves get reformed first, will the branches get reformed first, will the stem/trunk get reformed first, will the roots get reformed first or will the seed get reformed first? (Everyone said – the seed) OK. (The brother said – the seed would get reformed first). Yes. So, the seeds are in the Advance Party and the roots are among the BKs. The roots appear big and the seed is small. When a second tree grows, or when a plant grows, then the seed mixes itself. It is even sung – '*Dana khaak may milkar guley gulzar hota hai.*' (The seed mixes itself in the soil to create a garden). Some part of it mixes with the soil and some part of it goes to the plant. That seed gets ready when the tree grows completely; the flower, and then the fruit emerges from the flower; and when, the fruit becomes ripe, the seed gets detached from the fruit internally. It gets detached from the fruit also. It gets detached from the tree also. So, has the seed attained this stage now? Until the seeds have attained that stage, pointing fingers at the roots, pointing fingers at the stem, pointing fingers at the branches, pointing fingers at the leaves, pointing fingers at the fruits is useless.

Now you have come to the Advance Party. Now do you consider yourself to be a root or do you consider yourself to be the seed of the world? (The brother said – Seed) If you are the seed, then are the roots your children, creation or your creators? They are the creation. So, however may be the creation, for example Baba says – Children, whatever you are, however you are, you are mine. So, the entire human world tree belongs to the seed Father only. (A brother said – They will also come. Where will they go?) They will come first. Later, the people of the world will come. First who would get reformed? First the home would get reformed. Well, whether it is the children at the home follow the mother; whom do the virgins follow more? They follow the mother. And whether they are the children who follow the father, the virgins do not get inheritance. And the sons get inheritance. So, all the children who have come in the advance party, are they sons or daughters of the Father? They are the sons. Whether it is dolls, whether it is virgins, even then it is fitted in the intellect that – we are the children who obtain inheritance from the Father. And are they elder children or are they younger children? (Everyone said – they are elder ones) Hm? (They are the elder ones)

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Are they elder children? (Someone said – They are younger children) They are younger children. Some say – they are the elder children; some say that – they are the younger children.

The elder children are those who are *Suryavanshis* (belonging to the Sun Dynasty). What? Those who consider the Sun alone to be their Father. They neither get influenced by the Moon, nor do they get influenced by the *Chandravanshis* (those belonging to the Moon Dynasty). Neither do they get influenced by Islam, nor by those belonging to the Islamic dynasty. Neither do they get influenced by Christ, nor by the seed of Christ. Neither do they get influenced by the root/base-like soul of Christ, nor by those who follow Christianity. Under whose influence are they forever? They are influenced by one Father Sun. Nobody else can come and convert them. So, they are the elder children.

The elder children are said to be equal to the Father. For example, God forsake, if the father leaves his body, and if the father has ten children, 9 children, then what is the duty of the eldest child? It is his duty that he should take care of the other younger children, other brothers and sisters, in the same way, and look upon them in the same way as the father had looked upon them. That is why if it comes in the intellect that – "When will these BK people reform? When would these roots reform?" Then you would get the reply. When would they reform? When we reform, the world would reform. Somewhere or the other there is some shortcoming in our gathering, in our unity. When our unity reaches the mature/complete stage, then nobody would be able to break our unity. And how is unity formed? Through purity. There is some problem in our purity somewhere. The root cause is only one. One must check oneself every moment – Have I, a seed-like soul become detached from this world like tree? This body, these relatives of the body, these things related to the body, these places related to the body, should not be observed even while seeing, should not be heard even while listening. The stage should become like this.

Part - 2

Time 11.25 to 17.05
किसी माता जी ने बाबा को पूछा – बाबा, जो बच्चों के साथ मतलब बाबा रहते हैं, संग–संग रहते हैं। तो फिर उनके ऊपर परिस्थितियाँ आती हैं। क्यों आती हैं?

बाबा ने जवाब दिया – बाबा साथ रहते हैं, तो मतलब आप बाबा किसे समझते हैं? जब आपने बाबा कहा, तो आपका मूल इंटेन्शन साकार के ऊपर रहता है या साकार में प्रवेश की हुई जो ज्योति बिन्दु सुप्रीम सोल है, उसके ऊपर आपका ध्यान केन्द्रित है? आपका ध्यान किसके ऊपर केन्द्रित है? जब आप कहते हैं कि – बाबा जिनके साथ रहते हैं, तो आपका ध्यान बाबा की आत्मा के ऊपर केन्द्रित है या बाबा के शरीर के ऊपर केन्द्रित है? अगर आत्मा के ऊपर, तो आत्मा आपके साथ होगी। आपके साथ नहीं रह सकती है सदा? वो सुप्रीम सोल बाप को आप जितना याद करते हैं, साकार में निराकार को जितना याद करते हैं, वो आपके साथ नहीं रहता है? बँधा हुआ नहीं है आपके साथ रहने के लिए? आप फिर ऐसे क्यों कहते हैं? हँ?.....

.....(पेपर क्यों आते हैं? स्थितियाँ– परिस्थितियाँ क्यों आती हैं?) इसीलिए ना, कि ध्यान कहाँ केन्द्रित है? (किसी माता जी ने कहा – माया चोटी से पकड़ती क्यों है?) इसीलिए पकड़ती है कि – हम जिसको अपने साथ रखना चाहते हैं, वो हमारी बुद्धि से तिरक रहा है। राम के

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

भक्त, रहीम के बँदे। हैं ये सब आँखों के अंधे। राम और कृष्ण के अंदर जो सुप्रीम सोल है, उसको वो तथाकथित ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ भी भूल गये। क्या याद रह गया? वो शरीरधारी याद रह गया। शरीर हमारे साथ है। अभी भी रंगमंच पर, स्टेज पर जब सोल प्रवेश होती है, तो चिपकके बैठते हैं। हमारे साथ है।.....

.....अरे! वो देहधारी तुम्हारे साथ होने से परिस्थितियाँ खत्म हो जावेंगी क्या? बुद्धि में जिनके सदैव बैठा हुआ है कि – एक शिवबाबा ही हमारा कल्याणकारी है। और देह, जिस देह में मुकर्रर रूप से प्रवेश करता है, वो अंत तक किसी के साथ साकार में रहेगा क्या? हँ? नहीं रहेगा। फिर भी अपने पुरुषार्थ से अपने को अव्यक्त स्टेज में स्थिर करना पड़े। जो ऐसी प्रैक्टिस करेंगे, उनको अनुभव होगा कि – बाबा सदैव हमारे साथ साकार में है। उसका चित्र भी दिखाया। सदैव साकार में साथ है, इसका कौन–सा चित्र दिखाया है? अपना चित्र ही भूल गये? हँ? सदैव साकार में साथ है, उसका एक खास चित्र दिखाया हुआ है भक्तिमार्ग में। (किसी ने कहा – लक्ष्मी–नारायण) नहीं। (किसी ने कहा – अर्द्धनारीश्वर) नहीं। वो तो दो का ही हुआ।......

.....(किसी ने कहा– रासलीला) "रासलीला"। कौन ने बोला? हाथ उठाओ। हाँ। देखा, बढ़िया इंचार्ज टीचर मिली हुई हैं आप लोगों को। "रासलीला"। रासलीला में हर गोप–गोपी के साथ कौन दिखाया गया है? उन्होंने तो कृष्ण को दिखाय दिया। क्योंकि कृष्ण को भगवान समझते हैं। है कौन साथ में? शिवबाबा। सदैव साथ में अनुभव होगा। सोते समय भी अनुभव होगा हमारे साथ है, जागते समय भी अनुभव होगा हमारे साथ है। चलते, फिरते, उठते, बैठते कोई भी कर्म करते समय क्या अनुभव होगा? बाबा हमारे साथ है। ऐसी अव्यक्त स्टेज बन जाए। फिर ये प्रश्न रहेगा कि – बाबा जिनके साथ रहते हैं, उनको काहे के लिए परेशानियाँ आती हैं?......

.......(किसी माता जी ने कहा – दुनियाँ तो दुःख ही देने वाली है) ये दुनियाँ दुःख देने वाली भले है लेकिन हमारे साथ कौन है? हमारे साथ तो सुखदाता बाप हमारे साथ है ना। जब सदैव हमारे साथ है तो दुःख का नामनिशान हो ही नहीं सकता। अब बाबा भी कहते हैं यही बात। हेविनली गॉडफादर के बच्चे हैं, तो हेविन में होना चाहिए, फिर नरक में क्यों पड़े हैं? इसका मतलब? हँ? इसका क्या मतलब हुआ? कि हेविनली गॉडफादर के बच्चे अभी, रूहानी बाप के रूहानी बच्चे बने नहीं हैं। देहभान में रहते हैं।

A mataji asked Baba – Baba, when Baba lives with the children, then why do they face circumstances?

Baba replied – Baba lives with them. Then, in that case whom do you consider to be Baba? When you said Baba, then is your main intention towards the corporeal or is your attention focused on the point of light Supreme Soul who has entered the corporeal one? On whom is your attention focused? When you say that – those with whom Baba lives, then is your attention focused on the soul of Baba or is it focused on the body of Baba? If it is focused on the soul, then the soul would be with you. Can't it be with you always? The more you remember that Supreme Soul Father, the more you remember the incorporeal within the corporeal, then does He not be with you? Is He not bound to be with you? Then why do you say like this? Hm? ....

…….. (Why do papers, i.e. examinations come? Why do situations and circumstances come?) It is because, where is the attention focused? (A mataji said – Why does maya catch through the choti (topknot)?) It catches (through the *choti* (topknot)) because – the one whom

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

we want to keep with us, is slipping from our intellect. Worshippers of Ram, devotees of Rahim, all of them are blind. Those so-called Brahmakumar-kumaris also forgot that Supreme Soul who is present within Ram and Krishna. What did they remember? They remembered that bodily being. The body is with us. [On the stage, even now when the soul [of Bapdada] enters, they sit clinging.] Even now, when that soul [of Bapdada] comes, on the stage, they sit clinging[to the chariot of Bapdada]. He is with us…..

…….Arey! Will your circumstances end if that bodily being is with you? Those in whose intellect it is always there that – one Shivbaba alone is our benefactor. And will the body, the body in which He enters in an appointed/permanent form, remain with anyone till the end in corporeal form? Hm? He would not. Even then, one would have to make oneself constant in the *Avyakt* (subtle) stage through one's efforts. Those who make such practice would experience that - Baba is always with us in corporeal form. Its picture has also been shown. He is always in our company in corporeal form – which picture has been depicted for this? Did you forget your own picture? Hm? He is always together in corporeal form; there is a special picture depicted for that in the path of worship. (Someone said – Lakshmi-Narayan) No. (Someone said – Ardhnaareeshwar) No. That is a picture of only two ……….

………(Someone said – *Raaslila*) '*Raaslila*'. Who said that? Raise your hands. Yes. Look, you have got a good in-charge teacher. '*Raaslila*'. In the *Raaslila*, every Gop and Gopi (friends of Krishna) has been shown with whom? They have depicted Krishna because they consider Krishna to be God. Who is with them? Shivbaba. One would always experience Him to be in their company. One would experience even while sleeping that He is with us. One would experience even while being awake that He is with us. What would one experience even while walking, moving, getting up, sitting, or while performing any action? Baba is with us. The stage should become such *avyakta.* Then will this question remain – Why do those who live with the Father face problems? [Why do problems come to those who live with Baba?]..........

………(A mataji said – The world gives only sorrows) Although this world gives sorrows, but who is with us? The giver of happiness (*sukhdata*), the Father is with us, isn't He? When He is always with us, then there cannot be any name or trace of sorrow. Now Baba also says the same thing. If you are the children of the heavenly God Father, then you should be in heaven; then why are you lying in hell? What does it mean? Hm? What does it mean? It means that the children of the heavenly God Father have not yet become the spiritual children of the spiritual father. They live in body consciousness.

Part-3

Time 17.15 to 19.50
किसी भाई ने पूछा – बाबा, शंकर को देवता कहा जाता है और कभी–कभी चित्रों में शंकर को दाढ़ी वाला दिखाते हैं। लेकिन देवताओं को तो दाढ़ी नहीं होती।

बाबा ने जवाब दिया – जिस शंकर को देवता के रूप में दिखाया है, वो है संपन्न स्टेज। क्या? शंकर को यज्ञोपवित भी दिखाते हैं। उससे क्या साबित होता है? कि ब्राह्मण है। तो ब्राह्मण जब संपन्न स्टेज में है, जिस ब्राह्मण के लिए बोला है – जो पहला ब्राह्मण सो पहला देवता, सो पहला क्षत्रिय, सो पहला वैष्य, सो पहला शूद्र। किस समय का गायन है?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

संगमयुग में ही वो पहला ब्राह्मण भी बनता है, वो संगमयुग में पहला देवता भी बनता है, संगमयुग में वो पहला वैष्य भी, फिर शूद्र भी। तो शंकर को तो बहुरूपिया दिखाया जाता है। कभी बूढ़ा दिखाई पड़ता है, कभी छोटे बच्चे के रूप में पट पड़ा हुआ, सोया हुआ दिखाई पड़ता है। कभी पिनाकी दिखाई पड़ता है। धनुष–बाण हाथ में लेकर युद्ध करता हुआ दिखाया गया है। भाँति–भाँति के चरित्र दिखाये गये हैं। जैसे हम बच्चों की अवस्था अनेक प्रकार की बनती है, वैसे मनुष्य सृष्टि का जो बाप है, उसकी भी अवस्था अनेक प्रकार की बनती है। 63 जन्मों की रिल अभी भी बच्चों के साथ बाप की घूम रही है। बाप अकेला नहीं जावेगा। सब बच्चों को साथ ले करके जावेगा। इसलिए कभी बूढ़ा दिखाया है। जैसे ब्रह्मा को बूढ़ा दिखाया है दाढ़ी–मूँछ वाला, विकारी दिखाया है, वैसे शंकर का भी रूप ऐसा काला–काला भुजंग, दाढ़ी वाला बनाय दिया, जैसे रावण।

Time 20.05 to 21.05
किसी माता ने पूछा – बाबा एक माता पूछ रही है कि – जो माताएँ ज्ञान में चलती हैं, उनके युगल नहीं चलते हैं। वो क्या कारण है?
बाबा ने जवाब दिया – पूर्व जन्म, 63 जन्म तो हुए हैं भक्तिमार्ग में। तो भक्तिमार्ग में जब युगल ने अच्छा काम किया होगा, तो दाढ़ी –मूँछ बनकर के उन माताओं ने........, दाढ़ी–मूँछ वाला बनी होंगी कि नहीं? (माता जी ने कहा – हाँ जी) उन्होंने उनका साथ नहीं दिया होगा। तो हिसाब–किताब पूरा नहीं करेंगे वो? करेंगे। (माता जी ने पूछा – हमने भी ऐसा किया है बाबा उनके साथ?) माना आपके आधे जन्म पुरुष चोले के नहीं होते हैं? होते हैं। तो जब आप दाढ़ी–मूँछ वाले......, आपने भी अत्याचार किए होंगे।

Time 22.20 to 23.20
किसी माता जी ने पूछा – बाबा, शंकर से क्यों डरते हैं इतना? शंकर से इतना क्यों डरते हैं बी.के.वाले?
बाबा ने जवाब दिया – शंकर से आप क्यों नहीं डरते हैं? पहले इस बात का जवाब चाहिए। शंकर से आप क्यों नहीं डरते और वो शंकर से इतना क्यों डरते हैं? (किसी भाई ने कहा – इसलिए नहीं डरते कि हमको परिचय हो गया शंकर है क्या?) नहीं। 63 जन्म आपने राम वाली आत्मा का, कृष्ण वाली आत्मा का साथ दिया है। इसलिए जो साथ रहने वाले हैं जन्म जन्मांतर के, उनको डर क्यों लगेगा? और जो विरोधी बन गये और विरोधी बन करके उन्होंने आक्रमण किये, विदेशी बन करके, मुसलमान बन करके, क्रिश्चियन बन करके आक्रमण किये, तो वो तो दुश्मन बन गये ना। तो जो दुश्मन है, वो तो पावरफुल को सामने देख करके डरेगा ना।

Time 33.10 to 35.25
किसी भाई ने पूछा – बाबा, जैसे 1976 में एक तरफ तो बाप की प्रत्यक्षता हुई थी। दूसरी तरफ इंदिरा गाँधी की इमर्जेन्सी लगी हुई थी बाहर की दुनियाँ में और साथ ही जयप्रकाश नारायण का जो सत्याग्रह चला हुआ था। तो ऐसी परिस्थितियाँ कैसे बनी?
बाबा ने जवाब दिया – एक है हद की दुनियाँ और एक है बेहद की दुनियाँ। जो आपने बताया, वो सब हद की दुनियाँ की बात थी। ऐसा ही सन् 76 में जो बेहद ब्राह्मणों की दुनियाँ थी, उसका एजीटेशन भी गुजरात से शुरू हुआ था। गुजरात से ही जनता पार्टी बनना शुरू हुई। अज्ञानता पार्टी नहीं, जानता पार्टी। उनका मुखिया कौन था? जयप्रकाश नारायण। और उनका विशेष सहयोगी कौन था? कृष्णमुरारी देसाई। था ना। (किसी भाई ने कहा – हाँ जी) मुरारजी देसाई, मुरारी किसको कहते हैं? कृष्ण को। तो राम–कृष्ण वाली दोनों आत्माएँ ही एक साथ पार्ट बजाती हैं सन् 76 से। एजीटेशन की शुरूआत होती है गुजरात से। और वो एजीटेशन सारे भारत में फैल जाता है। ज्यादा दबाव दिया जाता है दिल्ली के ऊपर। एक वर्ष के अंदर ही सारी दिल्ली की सारी सीटें जीत लीं जनता पार्टी ने।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

सन् 76 में एडवांस पार्टी ने भी क्या किया? दिल्ली में डेरा डाला और दिल्ली में झंडा लहराय दिया। एक पूरा का पूरा सन्यास आश्रम हिल गया। हिल गया नहीं, टूट गया। इसलिए मुरली में बोला है – पूरा का पूरा एक सन्यास आश्रम उखड़ जावे, तो नाम बाला हो जावे। महरौली का सारा सेंटर टूट गया। सारे ही जिज्ञासु कनवर्ट हो गये एडवांस पार्टी में। इन्दिरा गाँधी का राज्य डोल गया। यहाँ भी कोई इंदिरा गाँधी है, जिनके अंदर में डर भरा हुआ है।

Time 17.15 to 19.50
A brother asked - Baba, Shankar is called a deity and sometimes Shankar is also shown to have a beard in the pictures. But deities do not have beard.
Baba replied - The Shankar, who has been shown in the form of a deity is the perfect stage. What? Shankar is also shown to be wearing a *yagyopavit* (the sacred thread). What does that prove? (It proves) that [he] is a Brahmin. So, when the Brahmin is in a perfect stage, the Brahmin for whom it has been said - the first Brahmin is the first deity, the first Kshatriya, the first Vaishya and the first Shudra. This is a praise/glory of which time? In the Confluence Age he becomes first Brahmin too; in the Confluence Age he also becomes the first deity, in the Confluence Age he also becomes the first Vaishya, then Shudra too. So, Shankar is depicted to be a *bahurupia* (one who assumes various forms). Sometimes he appears to be old, sometimes he appears to be lying flat, sleeping in the form of a small child. Sometimes he appears to be *Pinaaki* (an epithet of Shiva which means weilder of *Pinaak*, a mighty bow). (Sometimes) he has been depicted to be fighting a war with bow and arrows in his hands. Various kinds of acts (*charitra*) have been depicted. For example, we children achieve different kinds of stages; like wise the Father of the human world also achieves different stages. The reel of 63 births of the Father is rotating along with the children even now. The Father would not depart alone. The father would go taking all the children with him. That is why sometimes he is shown to be old. Just as Brahma is depicted as an old person having a beard and moustache; shown to be vicious, similarly Shankar's form is also shown dark like a snake; having a beard**;** like Ravan.

Time 20.05 to 21.05
A mataji asked – Baba, a mother is asking – those mothers who follow the path of knowledge, their husbands do not follow. What is the reason for that?
Baba replied – The past births, the 63 births have been taken in the path of worship. So, in the path of worship, when the (soul of the) husband might have performed good tasks, at that time (the souls of) those mothers might have been persons with beards and moustaches and…... would they have been those with a beard and moustache or not? (Mataji said – Yes) They might not have supported them (then). So, will they not clear their karmic accounts? They will. (Mataji asked – Baba, did we also do like this with them?) It means that did you not take half of the births as males? You did take. So, when you were persons with beards and moustaches.......you might have also tortured.

Time 22.20 to 23.20
A mataji asked – Baba, why do they fear Shankar so much? Why do BKs fear Shankar so much?
Baba replied – Why do you not fear Shankar? First this question needs to be answered. Why do you not fear Shankar and why do they fear Shankar so much? (A brother said – We do not fear because we have come to know as to what is Shankar?) No. You have supported the soul of Ram, the soul of Krishna for 63 births. That is why, those who live with them for many births, why would they fear? And those who became opponents, and after becoming

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

opponents, they attacked, they became foreigners, they became Muslims, they became Christians, and attacked. So, they became enemies, didn't they? So, the one who is an enemy would fear seeing the powerful one in front, will he not?

Time 33.10 to 35.25
A brother asked - Baba, for example, in 1976, on one side revelation of the Father had taken place. On the other side, Indira Gandhi had imposed emergency in the outside world and alongside Jaiprakash Narayan had started *Satyagraha* movement. So, how did such circumstances emerge?
Baba replied - One is the limited world and another is the unlimited world. Whatever you said was about the limited world. Similarly, even the agitation in the unlimited world of Brahmins had begun from Gujarat in 1976. The Janata Party (founded by Jaiprakash Narain) had also begun from Gujarat itself. It was not *'agyaantaa party'* (party of ignorance), but *'jaanta party'* (the knowledgeful party). Who was its chief? Jaiprakash Narayan and who was his special supporter? It was Krishnamurari Desai. Wasn't he? (A brother said - Yes) Morarji Desai. Who is called Murari? Krishna. So, the souls of both Ram and Krishna play a part together from 1976. The agitation starts from Gujarat. And that agitation spreads in entire India. More stress is laid on Delhi. Within a year Janata Party won all the seats in entire (the whole) Delhi. What did even the Advance Party do in 1976? They set up their camp in Delhi and unfurled [hoisted] the flag in Delhi. A complete *sanyaas ashram* (i.e. a BK center) shook. It did not just shake; it collapsed. That is why it has been said in the Murli - If a *sanyaas ashram* is completely uprooted, one would become famous. The entire center of Mehrauli collapsed. All the seekers of knowledge (*jigyasu*) got converted to the Advance Party. The kingdom of Indira Gandhi shook. Even here, there is an Indira Gandhi, whose mind is full of fear.

Part-4

Time 35.30 to 38.00
किसी बहन ने पूछा – बाबा, एडवांस में बोलते – उठते–बैठते बाबा को याद करना, ऐसे बता देते कोर्स में। एक भाई कहते थे कि – जब एक घंटा–दो घंटा टाइम मिलता है, तब किस रीति याद करना? बेसिक में बोलते हैं – कभी ये ड्रेस पहन लो या कभी स्वर्ग में बोलते हैं। साकार में निराकार को हमेशा याद करते रहेंगे। 1 घंटा टाइम मिल गया, वो लोग बैठते हैं। तो किस रीति योग करना? पूछते हैं बहुत लोग।

बाबा ने जवाब दिया – जिससे प्यार हो जाता है, जिससे दिल लग जाता है, वो घंटे–दो घंटे बैठ करके याद करता है उसे क्या? जो ओरिजिनल याद होती है, वो घंटे–दो घंटे की नहीं होती है। प्रीति जूट गयी, लगन लग गयी, दिल किसी से लग गया, तो वो लगातार याद आता है। उसको कहते हैं – निरंतर याद। और वो निरंतर याद तब ही होती है, महबूब और महबूबा जैसी, वो तब ही होती है जब महबूब भी साकार में हो और महबूबा भी साकार में हो। तो ये सहज याद का मंत्र है। तथाकथित ब्रह्माकुमार–कुमारी अपन को तो साकार समझते हैं और बाप को, बाप को निराकार समझते हैं। तो प्रीति कैसे जुटेगी? बाप का अंजाम है मुरलियों में – अंत तक साथ रहूँगा। साथ रहेंगे, साथ खेलेंगे, साथ खावेंगे, साथ चलेंगे घर और नयी दुनियाँ में और साथ लेके जावेंगे। तो साकार में बोला या निराकार की बात है? साकार की बात है। तो जिन्होंने निराकार को साकार में पहचान लिया, उनके लिए सहज हो गया। जिन्होंने 100 परसेंट पहचान लिया, उनके लिए 100 परसेंट सहज है। भूलना मुश्किल है। उनके लिए अभी अव्यक्त वाणी में बोल दिया – बाप के बगैर बच्चे नहीं रह

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

सकते साकार साथ के बगैर और बच्चों के बगैर बाप नहीं रह सकते। कम से कम साकार वाणी तो ज़रूर चाहिए। घड़ी–घड़ी चाहिए। और?

Time 38.06 to 40.55
किसी माता जी ने पूछा – बाबा, जैसे ये रुद्रमाला के मणके हैं, अंत तक अपने ही धर्म में रहते हैं या दूसरे धर्म में कनवर्ट होते हैं?

बाबा ने जवाब दिया – रुद्रमाला के जो भी मणके है, साढ़े चार लाख में से सवा दो लाख, वो दूसरे धर्म में जन्म लेंगे जाकर। शरीर छोड़ करके दूसरे धर्म में जाके जन्म ले सकते हैं, लेकिन जीतेजी अपने धर्म को परिवर्तन नहीं करेंगे। जैसे महात्मा बुद्ध ने सिद्धार्थ में प्रवेश किया। सिद्धार्थ कनवर्ट हो गया लेकिन उसका बाप, राजा शुद्धोधन और बाबा, उसका ग्रैण्ड फादर सिद्धार्थ का, बिंबसार, वो जिंदगीभर कनवर्ट नहीं हुआ। माना बौद्ध धर्म में गया नहीं। 4–6 जन्मों के बाद जब बुद्ध धर्म की संख्या बहुत बढ़ जाती है, उस समय जाकर के जन्म ले लिया। बौद्ध धर्म की राजाई भी स्थापन करनी है। क्यों जन्म ले लिया? क्योंकि जिस बच्चे में सिद्धार्थ में महान आत्मा ने प्रवेश करके जो महान कार्य करके दिखाया, वो बात उनकी बुद्धि में नहीं थी कि – कोई ऊपर से आत्मा आती है। उसने ये कार्य किया। सारे पूर्वीय धर्मखण्ड को कनवर्ट कर दिया। ये बात बिंबसार और शुद्धोधन की बुद्धि में नहीं थी। उन्होंने क्या समझा? (किसी भाई ने कहा – वो सिद्धार्थ ने ही किया) हाँ, उन्होंने ये समझा कि – ये सिद्धार्थ ने सारा काम किया। मेरा बच्चा, मेरे खून से पैदा हुआ, मेरे खून से पैदा हुआ बच्चा कितना श्रेष्ठ निकला। कितना पावरफुल निकला। तो ये प्रभाव बुद्धि में बैठ जाता है। आत्मा उस बच्चे से प्रभावित हो गयी। तो वो जो प्रभाव बुद्धि में बैठ गया, उस जन्म में तो वो बीज कनवर्ट नहीं होता क्योंकि बीज है। वो लगाव जो है, वो दो–चार जन्म के बाद प्रभाव देता है और बौद्धी धर्मखण्ड में बौद्धियों के यहाँ, वो आत्मा जन्म ले लेती है। (किसी भाई ने पूछा – फिर वो दुबारा आ जाती होगी?) हँ? (किसी भाई ने पूछा – फिर वो दुबार आ जाती होगी?) अपना काम किया, फिर उनको वापस आना है।

Time 44.35 to 46.24
किसी भाई ने पूछा – बाबा, परमधाम अभी खाली हो गया?

बाबा ने जवाब दिया – दुनियाँ की आबादी बतायी है सात–सौ, साढ़े सात–सौ करोड़, मनुष्यों की। अभी कितनी आबादी है? पाँच–सौ, छै–सौ करोड़। साढ़े छै–सौ करोड़ हुए होंगे। तो अंत तक ऊपर से उतरने वालों की संख्या बढ़ती रहेगी या घटती रहेगी? और–और ज्यादा आत्माएँ उतरती रहेंगी। (किसी भाई ने पूछा – बाबा, कब वो धरती पर जन्म लेंगे और उसके बाद कब वो कर्म करेंगे?) कब जन्म लेंगे! कब कर्म करेंगे! आजकल के 3–3 साल के बच्चे कम्प्यूटर चलाते हैं। तो जो 3 साल का बच्चा कम्प्यूटर चलाय सकता है, वो बाबा को याद नहीं कर सकता? (किसी ने कहा – अब दुनियाँ तेज हो गयी है) अभी तो फिर भी 30 साल पड़े हुए हैं। और बाबा कहते हैं – तुम सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। क्या? अभी सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। वानप्रस्थ अवस्था माने अनुभवी। जीवन का जंजाल है, उस जंजाल के अनुभवी होते हैं, उनको कहा जाता है – वानप्रस्थी। बच्चे भी अनुभवी हैं, दुनियाँ के। बल्कि देखा जाए तो आजकल माँ–बाप उतने अनुभवी नहीं हाते हैं, जितने बच्चे अनुभवी होते हैं।

Time 35.30 to 38.00
A sister asked – Baba, it is told in the advance (knowledge) that – one must remember Baba while standing and sitting – it is told they tell like this in the course. A brother used to say – when I get time for about an hour or two, how should I remember? In the basic knowledge it is told – wear this dress sometimes or they speak about the heaven. We always keep

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

remembering the incorporeal within the corporeal. If they get an hour's time, those people sit (in remembrance). So, how should one remember? Many people ask.

Baba replied – Does the one whom someone starts loving, the one whom someone gives his/her heart, does he sit and remember him for one or two hours? The original remembrance does not last only for an hour or two. If one starts loving someone, if one becomes devoted to someone, if one gives his/her heart to someone, then he/she comes in our thoughts continuously. That is called – continuous remembrance. And that continuous remembrance, like the one between the lover and the beloved, is possible only when, the lover (*mehboob*) is also in corporeal form and the beloved (*mehbooba*) is also in corporeal form. So, this is a mantra (hymn) of easy remembrance. The so-called Brahmakumar-kumaris consider themselves to be in corporeal form and they consider the Father to be incorporeal. So, how would the love develop? The Father has guaranteed in the Murlis that – I would be with you till the end. We would live together, we would play together, we would eat together, we would go home and the new world together and He would take us along. So, did he say it in corporeal form or is it a matter of the incorporeal one? It is a matter of the corporeal one. So, those who have recognized the incorporeal in corporeal form, it becomes easy for them. For those who have recognized 100 percent, it is 100 percent easy. It is difficult to forget. For them it has been said in the Avyakta Vani now – the children cannot live without the Father, without the company of the corporeal (medium); and the Father cannot live without the children. At least the corporeal versions are definitely required. It is required every moment. Anything else?

Time 38.06 to 40.55
A mataji asked – Baba, do these beads of Rudramala, remain in their religion till the end or do they get converted to other religions?
Baba replied – All the beads of the Rudramala, 2.25 lakh among the 4.5 lakhs, would go and take birth in the other religions. They can leave their bodies and take birth in other religions. But they will not change their religion as long as they are alive. For example, (the soul of) Mahatma Buddha entered Siddharth. Siddharth got converted, but his father, King Shuddhodhan and his Baba, i.e. Siddharth's grandfather, i.e. Bimbisaar did not get converted throughout his life. It means he did not go to Buddhism. After 4-6 births, when the numerical strength of Buddhism increases a lot, then he went and took birth at that time. The kingship of Buddhism has to be established. Why did he take birth? It is because the child Siddharth in whom the great soul entered and performed the great task, it was not contained in his intellect that - a soul comes from above. It performed this task. It converted the entire Eastern religious land. This matter was not in the intellect of Bimbisaar and Shuddhodhan. What did they understand? (A brother said - that was done by Siddharth) Yes, they thought that - Siddharth performed the entire task. My child, who is born from my blood, has proved to be so great. He has proved to be so powerful. So, this impression fits in the intellect. The soul became influenced by that child. So, that impression that was created in the intellect, that seed does not get converted in that birth because it is a seed. That attachment shows its effect after two-four births and that soul takes birth among Buddhists in the Buddhist land. (A brother asked - Does it come back again?) Hm? (A brother asked - Does it come back again?) It performed its task and then it has to come back

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time 44.35 to 46.24
A brother asked - Baba, has the soul world become vacant now?
Baba replied - The population of human beings in the world has been mentioned to be seven hundred, seven hundred and fifty crores (7, 7.5 billion). What is the population at present? It must be Five hundred, six hundred crores (5, 6 billion). It must have reached six hundred and fifty crores (6.5 billion). So, will the number of souls descending from above go on increasing or will it go on decreasing? More and more souls would go on descending. (A brother asked - Baba, when would they take birth on Earth and thereafter, when would they perform actions?) When would they take birth! When would they perform actions! Present day children aged 3 years also operate computers. So, when a 3 year old child can operate computers, can't he remember Baba? (Someone said - Now the world has become sharp/clever) Still 30 years are remaining. And Baba says - it is the *vaanprastha* stage for all of you. What? Now it is everybody's *vaanprastha* stage. *Vaanprastha* stage means experienced. There is a trap of life, those who have taken the experience of that entanglement (*janjaal*) are called - *vaanprasthi*. The children also have taken the experience of the world. If it is observed - now-a-days parents are not as experienced as the children.

Part-5

Time 46.22 to 48.20
किसी माता जी ने पूछा – बाबा, कई क्षेत्रों में अभी तक भी बाबा का संदेश नहीं पहुँचा है। जैसे हम जाते हैं, ...हमें पूछते हैं। तो हम संदेश देकर कहाँ पर, बी.के. के पास भेजें या इधर लेके आएँ? आप बताइये हम उनको एडवांस कोर्स सुनाएँ या फिर बेसिक वालों के पास भेजें?

बाबा ने जवाब दिया – सच्चाई सुनाओ। ऐसे नहीं कि – बेसिक नालेज सुनाएँ, एडवांस नालेज सुनाएँ। बेसिक नालेज में भी जो झूठी बातें हैं, वो मत सुनाओ। बेसिक नालेज में जो सच्ची बातें हैं सो सुनाओ। एडवांस माने तो है ही सच्चा। मिक्स करके ज्ञान दो। जैसे – भगवान आते हैं तो ब्रह्मा के द्वारा नयी सृष्टि रचते हैं। नयी सृष्टि जब रचते हैं तो जो ब्रह्मा के मुख से ज्ञान को सुन करके अपने जीवन में धारण करते हैं, दूसरों को सुनाते हैं, वो मुखवंशावली ब्राह्मण बनते हैं और जो मुख से निकली हुई बातों पर ध्यान नहीं देते, लेकिन ब्रह्मा के चिकने–चुपड़े, मोटे–ताजे, चिट्टे चेहरे पर ज्यादा ध्यान देते, वो फिर कुखवंशावली ब्राह्मण बन जाते हैं। कुखवंशावलियों की संख्या बहुत ज्यादा होती है और मुखवंशावलियों की संख्या बहुत थोड़ी होती है। तो दो प्रकार के ब्राह्मण तैयार हो गये। एक रावण, कुंभकर्ण, मेघनाद जैसे ढेर के ढेर आसुरी ब्राह्मण, ब्राह्णों की दुनियाँ में। और एक मुख से निकली हुई बातों के ऊपर ज्यादा ध्यान देने वाले मुखवंशावली ब्राह्मण। तो दो पार्टियाँ हो गयीं अभी। उनकी समझ में आ जाएगा।

Time 48.25 to 50.06
किसी बहन ने पूछा – बाबा, सरेण्डर होना है तो 18 साल तक समझदार होंगे तब सरेण्डर होना कहते हैं। वैसे भट्ठी करना है तो कितना उम्र के बच्चे जाएँगे तो अच्छा है?
बाबा ने जवाब दिया – जब समझदार होने लगें। कोई, कोई नियम थोड़े ही है कि – 18 साल का हो जाता है, वो ही समझदार होता है। 10–12 साल के भी समझदार बच्चे होते हैं। और दूसरी बात तो ये है – जो बाबा ने आ करके आश्रम खोले, वो तो कन्याओं–माताओं की सुरक्षा के लिए खोले हैं ना। अगर माँ–बाप देखते हैं कि – हमारी बच्ची 9 साल की है। अभी 10–11 साल की भी नहीं हुई। लेकिन मोहल्ले का वातावरण बहुत खराब है। जो

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

रिश्तेदार आते हैं, उनके भी वायब्रेशन बड़े गंदे हैं। तो बच्ची भले समझदार नहीं है लेकिन वो अगर उसको सरेण्डर कर देते हैं तो पाप करते हैं या पुण्य करते हैं? (सभी ने कहा – पुण्य करते हैं) तो भी पुण्य है। इसलिए भक्तिमार्ग में 9 दुर्गा पूजन जब होता है, तो 18 साल की कन्याओं को नहीं उठाते हैं। पूजन करने के लिए 9 साल की, 10 साल की कन्याओं को उठाते हैं। 9 साल की कन्या बहुत श्रेष्ठ मानते हैं।

Time 51.40 to 53.10
किसी बहन ने पूछा – बाबा, एक माता जी कहती है – बाबा मुरली में बोला – तुम संग रहूँ, तुम संग खाऊँ, तुम संग खेलूँ, तो खिलाइये–पिलाइये बोलने से बाबा ऐसा क्यों भक्तिमार्ग की बात मुर्दाबाद बोलते हैं?

बाबा ने जवाब दिया – खिलाइये–पिलाइये! माताएँ तो मुँह में देने लगती हैं और माताएँ ये इच्छा करती हैं कि – बाबा हमको खिलाएँ। तो बाबा यहाँ तक मुरली में बोला है – तुम संग खाऊँ। तो साथ–साथ खाएँ भले। तुम संग खाऊँ, तो खाने के लिए तो मना नहीं है। अब बाबा आएँ और क्लास पूरा होने के बाद एक–एक ने उनको लड्डू–पेड़ा मुँह में ठूसना शुरू कर दिया और संख्या है – 1000, 2000 की, 500 की। तो ये भक्तिमार्ग हो जाएगा, ज्ञानमार्ग होगा? जैसे कर्म हम करेंगे, हमें देख दूसरे करेंगे। एक ने अगर ऐसा किया, तो और जो 200, 500 बैठे हुए हैं, वो भी ऐसे ही करेंगे। तो हाल क्या होगा? तो समझ को कहा जाता है ज्ञान और बेसमझी से जो काम किया जाता है आगा–पीछा सोचे बगैर, वो होता है अज्ञान। तो ज्ञानयुक्त कर्म करना है। उस समय तो चलता था। थोड़े थे। अभी तो संख्या बढ़ती जा रही है।

Time 46.22 to 48.20
A mataji asked - Baba, in many areas Baba's message has not [yet] reached. For example, we go ...they ask us. So, after giving message, should we send them to the BKs or should we bring them here? Tell us, should we give them advance course or should we send them to the ones in basic [knowledge]?

Baba replied - Tell them the truth. It is not so that - we should narrate the basic knowledge; we should narrate the advance knowledge. Do not narrate the false matters that are there in the basic knowledge. Narrate the true matters that are there in the basic knowledge. Advance means that it is true anyway. Give them the mixed knowledge [incorporating both basic and advance knowledge]. For example - when God comes he creates the new world through Brahma. When he creates the new world, those who listen to the knowledge from the mouth of Brahma and imbibe it in their lives, and narrate it to others, become mouthborn (*mukhvanshavali*) Brahmins and those who do not pay attention to the versions that emerge from the mouth (of Brahma), but pay more attention to the soft and smooth, healthy, attractive face; then they become womb-born (*kukhvanshavali*) Brahmins. The number of womb-born/lap-born progeny is very high and the number of mouth-born progeny is very less. So, two kinds of Brahmins were formed. One kind is the numerous demoniac Brahmins like Ravan, Kumbhakarna, and Meghnad in the world of Brahmins. And one kind is the mouthborn Brahmins who pay more attention to the versions that emerge from the mouth (of Brahma). So, now two parties have been formed. They would understand it.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time 48.25 to 50.06
A sister asked - Baba, if someone has to surrender, then they say to surrender when they become sensible by the age of 18 years. Likewise, what is the suitable age for children to go and do bhatti?

Baba replied – When they start becoming wise/sensible. It is not a rule that the one who attains the age of 18 years would only become wise/sensible. There are also 10-12 year old children who are sensible. And the second thing is that – the ashrams that Baba has come and opened, have been opened only for the safety of the virgins and mothers, isn't it? If the parents observe/see that – our daughter is nine year old. She has not yet reached the age of 10-11. But the atmosphere of the colony (where they live) is very bad. The vibrations of the relatives who visit (their house) are also very dirty. So, even if the daughter is not wise/sensible, but if they surrender her, then do they commit a sin or do they perform a noble act? (Everyone said – they perform a noble act) Then also, it is a noble act. That is why in the path of worship, when the 9 Durgaas are worshipped, they do not select 18-year-old virgins. They select 9 year old or 10 year old virgins for worship. 9 year old virgin is considered to be very righteous.

Time 51.40 to 53.10
A sister asked – Baba, a mother says – Baba has said in the Murli that – I shall live with you, I shall eat with you, and I shall play with you. So when it has been told to feed and offer something to drink, then why does Baba say that any matter related to bhaktimarg is *murdabad* (damned/down, down)?

Baba replied –Offer food and drinks! Mothers start feeding into the mouth and mothers wish that – Baba should feed us. So, in the murli Baba has said to the extent that – I shall eat with you. So, you may eat together (i.e. with Baba). I shall eat with you; So, there is no restriction for eating. Well, Baba comes and after the class is over, if every one starts stuffing his mouth with *laddu-peda* (Indian sweets), and the number is 1000, 2000 or 500. So, will this be *bhaktimarg* (path of worship) or *gyanmarg* (path of knowledge)? As the action we perform, others would follow [the same] observing us. If one does like this, then the other 200, 500 [people] who are sitting would also do like that. Then what would be the condition? So, understanding (*samajh*) is called knowledge and whatever action is performed under ignorance, without thinking about its consequences is called ignorance. So, one must perform knowledge-ful acts. At that time it used to be ok. There were very few [people]. Now the number is increasing.

……………………………………………………………………………………………

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info